Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - SEMESTER - VI.
MJC - 11 Contemporary Indian Philosophy

1. Swami Vivekananda. 'सार्वभौम धर्म'
"Ideals of Universal Religion"

भौतिक सुख - सुविधाओं के बीच भी मनुष्य कुछ सर्वोच्च क्षमताओं को खोजता है। विवेकानन्द के अनुसार मनुष्य की यही अभिलाषा धार्मिक अभिलाषा है। वास्तव में धर्म मानवजीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। विवेकानन्द ने कहा है धर्म कोई सिद्धान्त या कर्मकाण्ड नहीं है बल्कि धर्म का सही अर्थ आत्मानुभूति में है। विवेकानन्द मानव को आध्यात्मिक मानते हैं। सार्वभौम धर्म (Universal Religion) का लक्ष्य ऐसी आध्यात्मिकता को प्राप्त करना है। धर्म - साधक को अपने धर्म के प्रति आस्था अवश्य होनी चाहिए लेकिन दूसरे धर्म के प्रति घृणा या अनास्था नहीं होनी चाहिए। किसी विशिष्ट धर्म को सत्य का अधिष्ठाता मान लेना उचित नहीं है।

'सार्वभौम धर्म' का कार्य मानव के सामने एक सार्वभौम आदर्श प्रस्तुत करना है। अत: विवेकानन्द का कहना है कि 'सार्वभौम धर्म' सदा वास्तविक धर्म होता है। यह बात सही है कि भिन्न - भिन्न धर्म विरोधात्मक हो सकते हैं, ठीक उसी तरह जैसे एक ही व्यक्ति या वस्तु के चित्र भिन्न - भिन्न कोणों से लेने पर भिन्न - भिन्न होते हैं, किन्तु विषय तो एक ही रहता है। इसी प्रकार से धर्म का भी आदर्श एक ही रहता है। सिर्फ देखने का दृष्टिकोण अलग - अलग होता है। एक ही कुएँ के जल को हिन्दू 'जल' कहते हैं, ईसाई वाटर कहते हैं, मुसलमान पानी कहते हैं। परन्तु जल सभी के लिए जल ही है। नामकरण की

भिन्नता से जल का रूप एवं स्वभाव नहीं बदलता है।

विवेकानन्द का कहना है कि पवित्रता या शुद्धता किसी भी धर्म या मान्यता तक सीमित नहीं रहती है सभी धर्मों में नैतिक और आध्यात्मिक व्यक्ति उत्पन्न होते हैं। यदि कोई व्यक्ति यह स्वप्न देखता है कि उसका ही धर्म सत्य है और अन्य सभी धर्म गलत मात्र हैं तो यह उसका भ्रम है। धर्म का एकमात्र उद्देश्य है - सभी धर्मों में एकता। वेदान्त धर्म व्यापक है जिसमें सर्वमान्यता एवं सहनशीलता के तत्व भरे हैं। स्वामीजी का महत्वपूर्ण योगदान पार्लियामेन्ट्स ऑफ रिलीजन में वेदान्त धर्म पर भाषण था। इसकी एक-एक पंक्ति अर्थपूर्ण है।

स्वामीजी ने कभी भी हिन्दू धर्म को वरण करने या ईसाई धर्म का परित्याग करने की बात नहीं की। इन्होंने वेदान्त धर्म का उद्घोष किया जिसमें एक ईसाई अच्छा ईसाई बन सके, एक मुसलमान अच्छा मुसलमान बन सके। इन्होंने वेदान्त की मूल बातों की शिक्षा दी जो सभी को मान्य है।

यद्यपि डा० भगवान दास ने सभी धर्म की एकता (Unity) की बात कही है परन्तु विवेकानन्द के अनुसार यह असंभव है। सार्वभौम धर्म

'क रिलीजन' नहीं हो सकता है क्योंकि यह सदा 'ए रिलीजन' होगा। धर्म के सामान्य तत्व हो सकते हैं किन्तु सार्वभौम धर्म नामक कोई धर्म नहीं हो सकता है। गालिग्लो गलिगाड के अनुसार सार्वभौम धर्म 'द रिलीजन' नहीं हो सकता वह 'ए रिलीजन' होगा। विवेकानन्द का विचार गलिग्लो गलिगाड के विचार से मेल खाता है। 'वेदान्त धर्म' 'ए रिलीजन' है। विवेकानन्द ने उसे 'द रिलीजन' नहीं माना है।

धर्म का विकास धर्म के स्वरूप से होता है और इसकी धार्मिक चेतना सर्वव्यापी है। इसे अनेकेश्वरवादी भी स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार सभी बातें मानसिक हैं। इसके तीन पहलू हैं। (i) Cognative (ii) Affective and (iii) Conactive.

धर्मों में विभिन्नता पायी जाती है। अतः सबों का अपना-अपना प्रेरणा, दर्शन और नियम होता है। सबों का दर्शन, प्रेरणा तथा नियम अलग-अलग होने के कारण धर्मों के बीच साम्प्रदायिक संघर्ष उत्पन्न होते रहता है। परन्तु वास्तव में सच्चा universal religion वही कहा जा सकता है जो सार्वभौमिकता में विश्वास करता है। अर्थात् सभी धर्मों का समान महत्व होता है। यह ऐतिहासिक सत्य है

4

कि मानव का अलग - अलग धर्म, अलग - अलग होता है और सभी आपस में संघर्ष करते रहते थे, क्योंकि सभी अपने विचार और मत को स्थापित करने का प्रयास किया करते थे।

विवेकानन्द के अनुसार अगर कोई धर्म सचमुच में Universal है तो उसे कम से कम दो शर्तों को मानना होगा —

(1) ऐच्छिक धर्म की स्वतंत्रता (It must open its gate to every individual) → Universal religion को यह स्वीकार करना होगा कि कोई भी व्यक्ति किसी धर्म के साथ जन्म नहीं लेता है। किसी भी धर्म के साथ जन्म नहीं लेता है। किसी भी धर्म को ग्रहण करने का चुनाव उसके इच्छा पर छोड़ देनी चाहिए इस संदर्भ में धर्म को व्यक्तिगत बनाकर इसे हम सर्वव्यापी बना सकते हैं।

(ii) सभी धर्मों को सन्तुष्ट करने की क्षमता (It must be able to give satisfaction and comfort to every religion sect). अब प्रश्न है कि क्या इस प्रकार का वास्तविक विश्वव्यापी धर्म संभव है।

विवेकानन्द के अनुसार

ऐसे धर्म का अस्तित्व है, परन्तु यह आपात में और बाह्य संघर्ष में इस प्रकार छुपा हुआ है कि हम देख नहीं पाते हैं।

एक साधारण अन्तःअनुभूति के द्वारा ही हम धर्म के स्वरूप को पहचान जाते हैं। सभी धर्म वास्तविक रूप में एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं वरन् इनमें जो अंतर है वह गौण है। धर्म की सत्यता विस्तृत है और विभिन्न धर्म सत्यता के एक पहलू पर बलपूर्वक ज़ोर डालता है और दूसरे अन्य पहलुओं का बहिष्कार करता है।

विवेकानन्द के अनुसार एक ही वस्तु का दो विरोधी गुण भी हो सकता है। इनके अनुसार अगर हम एक ही टेबल का विभिन्न कोणों से फोटो लेते हैं तो वह फोटो एक समान नहीं होता है। ठीक इसी प्रकार हम Reality को विभिन्न दृष्टिकोण से ग्रहण करते हैं लेकिन वह एक ही है। यहाँ विवेकानन्द का विचार Bradley से मिलता है। उन्होंने भी Reality की ऐसी ही परिभाषा दी है। विवेकानन्द का विचार भारतीय जैन दर्शन की विचारधारा 'स्याद्वाद' और 'अनेकान्तवाद' से भी मिलता है। इसप्रकार Universal religion का मूल तत्व है परन्तु इसका स्वरूप क्या है?

विवेकानन्द के अनुसार विभिन्न धर्मों में से समान पहलू

खोजना असम्भव नहीं है कम से कम कठिन अवश्य है। परन्तु विवेकानन्द Universal religion का अर्थ Universal Philosophy और Universal mythology से नहीं लगाते हैं।

धार्मिक प्रयोजन के विभिन्न मार्गों में Universal religion के पहलू मौजूद हैं। इस क्षेत्र में वह तर्कों पूर्ण स्वतन्त्रता देते हैं। Universal religion के प्रति 'स्वीकृति' की मांग करती है जो इसका केन्द्र बिन्दु है। सहिष्णुता को नकारात्मक बताया गया है और यह बताया गया कि इसके प्रयोग से गलत होते हुए भी कुछ तत्वों को स्वीकृति मिल जाएगी। इसलिए विवेकानन्द ने Possitive acceptance को स्वीकार किया है।

यह मनोवृत्ति विवेकानन्द को एकदम समान पहलू को खोजने में बाधा पहुँचाती है जो सभी धर्मों में व्याप्त है और इसका परिणाम अपने को सभी धर्मों में अभिव्यक्त करती है और जो Universal Religion का सार है वह समान बिन्दु ईश्वर है।

जिसे विभिन्न धर्मों ईश्वर वह सत्ता है ने विभिन्न रूपों में ग्रहण किया है। ईश्वर शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया

गया है। इसका धर्म व्यक्तिगत ईश्वर भी हो सकता है और इसका धर्म व्यक्तिगत ईश्वरनहीं भी हो सकता है। और इसका धर्म ऐसा ईश्वर भी हो सकता है जिसका विश्व व्यापी अस्तित्व है या तो विश्व का विश्वव्यापी एकता हो। प्रत्येक धर्म चैतन्य या आध्यात्मिक रूप से इस एकता या ईश्वर की खोज के लिए संघर्षरत है। इसप्रकार यह Universal religion का Ideal कहा जा सकता है।

इसधार्मिक Ideal के अलावे Universal religion को प्रत्येक मानव मन की भूख को भी समाप्त करना होगा। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु होता है इसके समस्या का समाधान इस धर्म को देना होगा। इसप्रकार यह सभी दर्शन के पहलु संयोग कार्य और mysticism इत्यादि के समान रूप से तारतम्य स्थापित करता है और यह धर्म विवेकानन्द के अनुसार मार्ग में 'योग' के द्वारा अपनाया जा सकता है। इन्होंने चार प्रकार के योग का वर्णन किया है।

इसप्रकार विवेकानन्द ने Universal religion के स्वरूप और आदर्श की चर्चा की है। कुछ हद तक इनका विचार गाँधी के धार्मिक विचार से मिलता है। गाँधी ने भी विभिन्न धर्मों को Different roads

Concerning to same int. बतलाया है।

को धर्म जैन; विवेकानन्द Morality Inseparable मानते हैं। यह धर्म और नैतिकता के सम्बन्ध एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा कर देता है। कोई Humanistic and Rationalistic विचारकों से यह प्रश्न कर सकता है कि 'क्या यह संभव नहीं है कि self sufficient, autonomous और secular morality logic और Thinking पर आधारित किया जा सकता है। myths पर Morality जो Theistic आधारित है। वह आधुनिक मानव के लिए कोई महत्व नहीं रखता है। इसी और Russell ... इत्यादि Humanist धर्म और ईश्वर को ठुकराकर सर्वोच्च नैतिक आदर्श में रहते हैं।

विवेकानन्द जी के इसप्रकार स्वामी यही स्वरूप है। सार्वभौम धर्म का